ISSN: 2277-7857

समकालीन हस्तक्षेप

साहित्य, समाज और संस्कृति की पीयर-रिव्यूड त्रैमासिक शोध-पत्रिका

वर्ष: 18, अंक: 4, अप्रैल - जून 2025

SJIF 2023 = 7.858

संपादक

डॉ. कपिल कुमार गौतम

वर्ष: 18, अंक: 4, अप्रैल-जून 2025

समकालीन हस्तक्षेप

साहित्य, समाज और संस्कृति की पीयर-रिव्यूड त्रैमासिक शोध-पत्रिका

‘समकालीन हस्तक्षेप’ त्रैमासिक शोध-पत्रिका में प्रकाशित शोध-पत्रों/ लेखों के माध्यम से व्यक्त किये गए विचार और स्थापनाएं लेखक के अपने हैं। उनके विचार और स्थापनाओं से संपादक मंडल अथवा प्रकाशक सहमत हों, यह जरुरी नहीं है। शोध-पत्रों/ लेखों में व्यक्त विचारों और स्थापनाओं के लिए सम्बन्धित लेखक स्वयं जिम्मेदार होंगे। विवाद की स्थिति में सभी मामले केवल भद्रक न्यायालय (उड़ीसा) के अधीन होंगे।

इस शोध-पत्रिका के सर्वाधिकार सुरक्षित हैं। समीक्षा, लेखों तथा शोध-पत्रों में उद्धरण के अतिरिक्त, प्रकाशक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश का अनुवाद, प्रतिलिपि, रिकॉर्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक माध्यम से पुनर्प्रकाशित नहीं किया जा सकता। केवल सम्बंधित शोध-पत्र के लेखक ही अपने शोध-पत्र को अकादमिक तथा व्यक्तिगत उपयोग करने हेतु निर्बाध रूप से स्वतंत्र होंगे।

© समकालीन हस्तक्षेप

वर्ष: 18, अंक: 4 , अप्रैल-जून 2025

Published by

RESEARCH WALKERS
2nd Floor, Rout Niwas, Kuansh,
Near Town Police Station, Bhadrak,
Odisha, India – 756100

Email: issn22777857@hotmail.com
WhatsApp message: 09431109143
Website: www.hastakshep.co.in
www.facebook.com/hastakshep
www.instagram.com/hastakshep

संपादक मंडल

संपादक

डॉ. कपिल कुमार गौतम
असिस्टेंट प्रोफेसर, हिंदी विभाग,
संघटक राजकीय महाविद्यालय, मीरापुर, बांगर, बिजनौर,
एम.जे.पी. रूहेलखण्ड विश्वविद्यालय, बरेली, उत्तर प्रदेश

प्रबंध-संपादक

शेषनाथ वर्णवाल
मैनेजिंग पार्टनर, रिसर्च वॉकर्स,
एमआईजी 108, हेडगेवार कॉलोनी,
साँची, मध्य प्रदेश

उप-संपादक

डॉ. अलका धनपत
पूर्व-विभागाध्यक्ष, हिंदी विभाग,
स्कूल ऑफ़ इंडियन स्टडीज़, महात्मा गाँधी इंस्टिट्यूट,
यूनिवर्सिटी ऑफ़ मॉरीशस, मॉरीशस

डॉ. दीनानाथ
प्रोफेसर, हिंदी विभाग,
सीएमपी डिग्री कॉलेज, इलाहाबाद विश्वविद्यालय,
प्रयागराज, उत्तर प्रदेश

डॉ. रजनी बाला अनुरागी
एसोसिएट प्रोफेसर, हिंदी विभाग,
जानकी देवी मेमोरियल कॉलेज, राजिंदर नगर,
दिल्ली विश्वविद्यालय, नई दिल्ली

डॉ. मोहन लाल चढ़ार
एसोसिएट प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष,
प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्त्व विभाग,
इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय जनजातीय विश्वविद्यालय,
अमरकंटक, मध्य प्रदेश

संपादक मंडल सदस्य

डॉ. प्रदीप कुमार
एसोसिएट प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान विभाग,
सत्यवती कॉलेज, अशोक विहार
दिल्ली विश्वविद्यालय, नई दिल्ली

डॉ. प्रवीण कटारिया
असिस्टेंट प्रोफेसर, हिंदी विभाग,
चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय,
मेरठ, उत्तर प्रदेश

डॉ. उमाशंकर कौशिक
असिस्टेंट प्रोफेसर, योग शास्त्र
के.जे. सोमैया इंस्टिट्यूट ऑफ़ धर्मा स्टडीज,
सोमैया विद्या विहार विश्वविद्यालय,
पूर्वी मुंबई, महाराष्ट्र

डॉ. अनीश कुमार
असिस्टेंट प्रोफेसर, हिंदी विभाग,
गुरु घासीदास विश्वविद्यालय,
बिलासपुर, छत्तीसगढ़

डॉ. शरद पंडरीनाथ सोनवने
असिस्टेंट प्रोफेसर (अतिथि), पालि प्राकृत
विभाग, कविकुलगुरु कालिदास संस्कृत
विश्वविद्यालय, रामटेक, नागपुर

डॉ. अवधेश कुमार
असिस्टेंट प्रोफेसर (अतिथि), हिंदी विभाग,
डॉक्टर हरिसिंह गौर केन्द्रीय विश्वविद्यालय,
सागर, मध्य प्रदेश

डॉ. लेखराम सेलोकर
पी-एच. डी. (बौद्ध अध्ययन)
आनंद बुद्ध विहार, समता नगर,
नागपुर, महाराष्ट्र

डॉ. अमित कुमार
असिस्टेंट प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान
शिवाजी कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय,
राजा गार्डन, नई दिल्ली

डॉ. संदीप कुमार
असिस्टेंट प्रोफेसर, फैकल्टी ऑफ़ लीगल स्टडीज,
मदरहूड विश्वविद्यालय, रूडकी, उत्तराखंड

डॉ. राहुल सिद्धार्थ
असिस्टेंट प्रोफेसर, हिंदी विभाग,
साँची बौद्ध-भारतीय ज्ञान अध्ययन
विश्वविद्यालय, साँची, मध्य प्रदेश

डॉ. हंसा दीप
लेक्चरार हिंदी, भाषा अध्ययन विभाग,
यूनिवर्सिटी ऑफ़ टोरंटो, किंग्स कॉलेज सर्किल,
टोरंटो, ओंटारियो, कनाडा

डॉ. आमिर खान अहमद
असिस्टेंट प्रोफेसर, दर्शनशास्त्र विभाग,
हरी-गायत्री दास महाविद्यालय,
गुवाहाटी विश्वविद्यालय,
गुवाहाटी, असम

डॉ. विकास कुमार पाठक
समन्वयक, अनुवादिनी फाउंडेशन,
अखिल भारतीय तकनीकी शिक्षा परिषद्, उच्चतर
शिक्षा विभाग, शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार

डॉ. प्रतीक सागर
असिस्टेंट प्रोफेसर, आर्ट एंड डिजाईन विभाग,
शारदा स्कूल ऑफ़ डिजाईन, आर्किटेक्चर एंड
प्लानिंग, शारदा यूनिवर्सिटी, ग्रेटर नॉएडा

डॉ. सुनीता गुरुंग
असिस्टेंट प्रोफेसर, हिंदी विभाग
लेडी श्रीराम महिला महाविद्यालय,
दिल्ली विश्वविद्यालय, नई दिल्ली

डॉ. लोकेश चौधरी
असिस्टेंट प्रोफेसर, योग विज्ञान विभाग,
श्री कल्लाजी वैदिक विश्वविद्यालय,
निंबाहेड़ा, चित्तौड़गढ़, राजस्थान

डॉ. विपिन कुमार शर्मा
असिस्टेंट प्रोफेसर, हिंदी विभाग,
श्री बाबू कलीराम राकेश राजकीय महाविद्यालय,
चूड़ियाला, हरिद्वार, उत्तराखंड

डॉ. प्रत्युष प्रशांत
पी-एच.डी., सेंटर फॉर वीमेंस स्टडीज,
जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली

अनुक्रम

वर्ष: 18, अंक: 4, अप्रैल-जून 2025

सम्पादकीय

1.	कवि रूप में अनुवादक आचार्य रामचन्द्र शुक्ल	डॉ. शिवानी पंवार	9-14
2.	गुरु ग्रन्थ साहिब में संकलित कबीर बानी: वैचारिक समरसता का परिप्रेक्ष्य	डॉ. रंजीत कौर	15-20
3.	हिंदी साहित्य में प्रमुख महिला साहित्यकारों का योगदान	प्रो. अशोक वसंतराव मर्डे, उपेंद्र कुमार	21-24
4.	कृष्णा सोबती का साहित्यिक योगदानः नारी चेतना से सामाजिक विमर्श तक	प्रवीण कुमार दुबे	25-29
5.	स्वतंत्रता से पूर्व मैथिली कथा में दलित चेतना	प्रवीण कुमार	30-33
6.	हिन्दी दलित आत्मकथाएं: वस्तु और शिल्प	कैलाश पंडित	34-37
7.	किन्नर समुदाय की संघर्षमयी दास्तां को प्रतिबिंबित करती उपन्यास 'पोस्ट बॉक्स नं. 203 नाला सोपारा'	चन्द्रशुभम, प्रो. अनुसुइया अग्रवाल	38-42
8.	संत रैदास एवं उनका योगदान	योगेश्वर कुमार, डॉ.बृजेन्द्र पाण्डेय	43-47
9.	राजकमल की मैथिली कथाओं में हाशिये की स्त्रियाँ	प्रियंका कुमारी, प्रो० अशोक कुमार मेहता	48-52
10.	रामदरश मिश्र के उपन्यासों में ग्रामीण जीवन	सीमा सिंह	53-56
11.	छत्तीसगढ़ी काव्य साहित्य में शिल्प-छंद	गीतेश कुमार अमरोहित, डॉ. बृजेन्द्र पांडेय	57-62
12.	'धार' उपन्यास : आदिवासी संघर्ष की गाथा	दीक्षा मौर्या	63-67
13.	'तिरिया-चरित्तर' कहानी में स्त्री की त्रासद गाथा	अस्मिता पटेल	68-72
14.	दक्षिण पूर्वी एशिया में भारत के लिए संभावनाएं और चुनौतियां	बाबूलाल सुंदरिया, पायल जैन	73-76
15.	मोहनदास नैमिशराय के उपन्यासों में वेश्यावृत्ति से मुक्ति के लिए राष्ट्र की बेटियों का संघर्ष	आलोक यादव, डॉ. रंजना पाण्डेय	77-81
16.	आधुनिकता की विकास-यात्रा: एक अंतर्दृष्टि (भारत के संदर्भ में)	ज्योति	82-86
17.	'फिर बैतलवा डाल पर' निबंध संग्रह में अभिव्यक्त ग्रामीण परिवेश	करुणा सैनी	87-90

18.	डुवर्स के आदिवासी लोगों के त्योहारों का एक परिचयात्मक अध्ययन	बिक्रम राई	91-95
19.	'पगहा जोरी-जोरी रे घाटो' कहानी संग्रह में पितृसत्ता से प्रतिरोध	सुरभि कुमारी	96-98
20.	समकालीन भारतीय चित्रकला एवं कलाभिव्यक्ति पर पश्चिमी कला चिंतन तथा कला प्रवृत्तियों का प्रभाव	अभिषेक कुमार दुबे, प्रो. अजय जैतली	99-103
21.	अज्ञेय के साहित्य में अध्यात्म : एक विश्लेषणात्मक अध्ययन	मुकुंद शर्मा	104-108
22.	उत्तराखंड में आपदा निवारण में स्थानीय समुदायों की भूमिका: एक ऐतिहासिक अध्ययन	पंकज टमटा	109-114
23.	ई-एनएएम: कृषि बाजारों में क्रियान्वयन और उपलब्धियाँ : एक व्यवस्थित अध्ययन	गौतम कुमार, डॉ. बिद्यानंद चौधरी	115-118
24.	भारतीय नाट्य परंपरा और हिन्दी रंगमंच	शुभम कुमार सेन, डॉ. पूनम पाण्डेय	119-122
25.	'रामचरितमानस' में भक्ति के सूत्र और भारतीय ज्ञान-परंपरा	रजनीश कुमार	123-126
26.	आदिवासी कथा-साहित्य में स्त्री अस्मिता एवं प्रतिरोध के विविध स्वर	जेरेलडिना मुचवार	127-130

सम्पादक की कलम से...

आज का भारत एक युवा राष्ट्र है। देश की जनसंख्या का बड़ा हिस्सा शिक्षित युवाओं का है, जिनके सपनों, संघर्षों और आकांक्षाओं पर आने वाले भारत की दिशा और दशा निर्भर करती है। यह युवा वर्ग नई ऊर्जा, नई दृष्टि और नए संकल्पों से परिपूर्ण है, जिसकी शक्ति राष्ट्र निर्माण की सबसे बड़ी पूँजी कही जा सकती है। लेकिन विडंबना यह है कि शिक्षा और रोजगार के बीच एक गहरी खाई दिन-प्रतिदिन चौड़ी होती जा रही है। एक ओर उच्च शिक्षा संस्थानों से बड़ी संख्या में स्नातक और परास्नातक युवा निकल रहे हैं, वहीं दूसरी ओर रोजगार के अवसर बहुत ही सीमित होते जा रहे हैं। स्थिति यह है कि डिग्री प्राप्त करना अब नौकरी की गारंटी नहीं रह गई है। लाखों-करोड़ों युवाओं के सामने यह सवाल खड़ा है कि उनकी अर्जित योग्यता और कठिन परिश्रम का मूल्यांकन क्यों नहीं हो पा रहा है। यही कारण है कि युवाओं के भीतर असुरक्षा, असंतोष और निराशा की भावना बढ़ रही है।

वर्तमान शिक्षा व्यवस्था पर दृष्टि डालें तो यह स्पष्ट हो जाता है कि सरकारी संस्थानों के बजाय निजी शिक्षा संस्थानों का वर्चस्व लगातार बढ़ता जा रहा है। एक समय था जब सरकारी विद्यालयों को समाज में सम्मान और विश्वास की दृष्टि से देखा जाता था, क्योंकि वे अपेक्षाकृत कम शुल्क पर सभी वर्गों को शिक्षा उपलब्ध कराते थे। किंतु आज परिदृश्य बदल गया है। निजी विद्यालयों और तकनीकी संस्थानों ने तेजी से अपनी जड़ें जमा ली हैं। इन संस्थानों का ढाँचा भले ही आधुनिक दिखाई देता हो और सुविधाएँ आकर्षक प्रतीत होती हों, किंतु शिक्षा का मूल उद्देश्य ज्ञान, मूल्य और अवसर की समानता, इनकी प्राथमिकता में पीछे चला गया है। निजीकरण ने शिक्षा को अवसर कम और व्यापार अधिक बना दिया है। अब गुणवत्तापूर्ण शिक्षा का अधिकार प्रत्येक छात्र के लिए समान रूप से उपलब्ध नहीं रह गया है। यह इस बात पर निर्भर करता है कि विद्यार्थी या उसके माता-पिता कितनी आर्थिक सामर्थ्य रखते हैं। अमीर वर्ग अपने बच्चों को महँगी फीस वाले निजी विद्यालयों और विश्वविद्यालयों में भेज सकते हैं, जबकि गरीब और मध्यम वर्ग के बच्चे सीमित साधनों वाले सरकारी संस्थानों तक ही सिमट जाते हैं। परिणामस्वरूप, शिक्षा एक अधिकार न होकर एक विशेषाधिकार बनती जा रही है। यह असमानता केवल व्यक्तिगत स्तर पर नहीं, बल्कि पूरे समाज में एक नई खाई उत्पन्न कर रही है। यह खाई केवल आर्थिक ही नहीं है, बल्कि सामाजिक अवसरों, प्रतिस्पर्धा और आत्मविश्वास की खाई भी है। यदि शिक्षा ही अवसर की समानता न दे सके तो समाज में समानता, न्याय और लोकतांत्रिक आदर्श भी कमजोर पड़ने लगते हैं।

इसी क्रम में शिक्षण संस्थानों में अतिथि और संविदा शिक्षक व्यवस्था ने शिक्षा जगत में एक और विडंबना खड़ी कर दी है। शिक्षक, जिसे समाज में सबसे सम्माननीय स्थान दिया जाता है और जिसे 'राष्ट्र निर्माता' कहा जाता है, उसका अपना भविष्य आज असुरक्षित और अस्थिर है। संविदा पर कार्यरत शिक्षक न तो आर्थिक दृष्टि से सुरक्षित हैं और न ही सामाजिक सम्मान की दृष्टि से संतुष्ट। उन्हें स्थायी पदों के शिक्षकों की तुलना में न केवल कम वेतन मिलता है, बल्कि उनकी सेवा-शर्तें भी अस्पष्ट और असुरक्षित रहती हैं। वे हर समय इस भय में जीते हैं कि कब अनुबंध समाप्त हो जाएगा और कब आजीविका का सहारा छिन जाएगा। ऐसी परिस्थितियों में उनसे यह अपेक्षा करना कि वे पूरे मनोयोग और समर्पण से भावी पीढ़ी का निर्माण करें, कहीं न कहीं अन्यायपूर्ण प्रतीत होता है। जब शिक्षक स्वयं मानसिक और आर्थिक असुरक्षा से जूझ रहा हो, तो वह विद्यार्थियों को स्थिरता, आत्मविश्वास और सकारात्मक दृष्टिकोण कैसे दे सकता है? यह सच है कि संविदा शिक्षक पूरी निष्ठा से काम करना चाहते हैं, किंतु उनके कार्य की परिस्थितियाँ उनकी क्षमता और उत्साह को कुंठित कर देती हैं। इससे शिक्षा की गुणवत्ता पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ना स्वाभाविक है। दरअसल, यह केवल शिक्षकों की व्यक्तिगत समस्या नहीं है, बल्कि पूरे समाज की समस्या है। जिस समाज में शिक्षक असुरक्षित और उपेक्षित होगा, वहाँ ज्ञान की धारा कभी प्रखर और निर्मल नहीं बह सकती। यदि सरकार और नीति-निर्माता इस विडंबना पर गंभीरता से ध्यान नहीं देंगे, तो शिक्षा का स्तर धीरे-धीरे गिरता जाएगा और इसका खामियाजा आने वाली पीढ़ियों को भुगतना पड़ेगा।

दूसरी ओर, शिक्षित युवाओं की बेरोजगारी की समस्या विकराल रूप ले चुकी है। हर वर्ष लाखों छात्र-छात्राएँ डिग्रियाँ लेकर निकलते हैं, परंतु उपयुक्त रोजगार उन्हें नहीं मिल पाता। कहीं पद ही उपलब्ध नहीं हैं, तो कहीं योग्यता के अनुरूप अवसर नहीं मिलते। कई बार वर्षों तक प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी करने के बाद भी युवाओं को नौकरी नसीब नहीं होती। परिणामस्वरूप, युवाओं के भीतर असंतोष, हताशा और पलायन की प्रवृत्ति बढ़ रही है। इन परिस्थितियों में सबसे महत्वपूर्ण प्रश्न यह है कि जब शिक्षित युवा ही उपयुक्त रोजगार से वंचित रहेंगे, तो देश की प्रतिभा और ऊर्जा किस दिशा में प्रवाहित होगी? निजीकरण, संविदा व्यवस्था और बेरोजगारी, ये तीनों मिलकर शिक्षा और रोजगार के बीच खतरनाक असंतुलन पैदा कर रहे हैं।